>

Title: Need to revive Madhubani Kalasala Institution in East champaran to provide self-employment.

श्रीमती रमा देवी (शिवहर): महोदय, मेरे संसदीय क्षेत्र के पूर्वी चम्पारण जिला के चिरैया प्रखंड में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में उनके सहयोगी श्री पुरूषोत्तम मथुरा दास द्वारा सन् 1918 में राजकीय बुनियादी मध्य विद्यालय मधुबनी कला-सला नामक बहुत ही महत्वाकांक्षी संस्था की स्थापना वृहत रूप में किया गया था। जिसमें बुनियादी शिक्षा के साथ-साथ लगभग 700 बुनकरों द्वारा रेशम की बुनाई, स्वेटर बुनाई, मधु उत्पादन, गौ पालन, तेल उत्पादन, धान, कुटाई, साबुन उत्पादन एवं सूत कटाई जैसे अनेकों कार्य होते थे। यहां के निर्मित उत्पादकों का निर्यात देश के विभिन्न हिस्सों एवं सरकारी संस्थानों में किया जाता था। विशेष कर यहां से निर्मित रेशम वस्त्र बहुत ही प्रसिद्ध एवं उच्च कोटि का होता था। इस संस्था से पूर्व में भारत के महान विभूति प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण एवं भू-दान आंदोलन के जनक श्री विनोबा भावे जी भी जुड़े रहे हैं। आज भी उक्त संस्था में खादी ग्रामोद्योग के सभापति होने के नाते डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के नाम पर उसमें कुछ जमीन रजिस्ट्रर्ड है। यह संस्था लगभग 20 एकड़ में फैली हुई है। ऐतिहासिक होने के साथ साथ भारतीय प्राचीन संस्कृति का भी द्योतक है। परंतु, दुर्भाग्यवश पिछले कई दशक से यह महत्वाकांक्षी एवं बहुआयामी संस्था कच्चे माल एवं आर्थिक तंगी से जूझ रही है। इससे जुड़े लोग भुखमरी की स्थिति से गुजर रहे हैं। इसका भवन भी काफी जर्जर हो चुका है। इस संस्था में आने-जाने के लिए आज भी कोई पक्की सड़क नहीं है और न ही विद्युतीकरण हुआ है।

अत: सरकार से अनुरोध है कि उक्त मधुबनी कला-सला संस्था को गांधी सर्किट से जोड़ते हुए एक कार्य योजना बनवा कर पुनर्निमाण हेतु विशेष पैकेज दिया जाए या वहां भागलपुर की तर्ज पर बुनकर मेगा कलस्टर की स्थापना हो जिससे यह संस्था अपना गौरव प्राप्त कर सके तथा इस क्षेत्र के लोगों के स्वरोजगार के साथ-साथ पर्यटन का भी केन्द्र बन सके।